मैथिलीक अभिभावक : डॉ० अमरनाथ झा

— डॉ० रामदेव झा

डॉ० अमरनाथ झा अपन ज्ञान-गरिमासँ मिथिला मात्र नहि अपि तु समस्त भारतकेँ गौरवान्वित कयने छलाह। अवश्ये ओ लोकनि अत्यन्त भाग्यशाली छलाह जनिका डॉ० अमरनाथ झाक सान्निध्य कोनहु रूपमे प्राप्त भेलनि – मित्र ओ सहयोगी रूपमे, छात्र ओ अनुदिष्ट कर्मचारी रूप मे अथवा कोनो सभा-समारोह मे दर्शक-श्रोता रूपमे।

छात्रावस्थामे डॉ० अमरनाथ झाक नाम शिक्षा-जगतक मिथक-नायक रूपमे सुनैत रहलियनि। मैट्रिक्युलेशनक मैथिली पाठ्यग्रन्थमे हिनक एकटा संस्मरणात्मक निबन्ध पढ़ने रही आ लहेरिया सराय सँ प्रकाशित 'निर्माण' नामक साप्ताहिकमे हुनक एकटा पुरान बृहत् भाषण क्रमशः छपैत छल, से पढ़बाक अवसर भेटैत छल। लहेरियासराय स्थित कमला नेहरू स्मारक पुस्तकालय मे हिनक एकटा पुस्तक 'विचार धारा' भेटल, जकरा रुचि पूर्वक पढ़ि गेल रही। समय जहिना-जहिना बढ़ैत गेल तहिना-तहिना डॉ० अमरनाथ झाक जीवनी आ कार्यकलापक सम्बन्धमे, मैथिली भाषा-साहित्यमे हुनक योगदानक सम्बन्धमे बहुतो अभिनव ओ रोचक तथ्यक अभिज्ञान होइत गेल। परन्तु से सभ तखन जखन ओ वर्तमान नहि, अतीत बनि गेल छलाह। मूर्त घटमान नहि, इतिहास बनि गेल छलाह।

परन्तु एहि महापुरुषक एकदा दर्शन ओ विचार-श्रवणक सौभाग्य अवश्य प्राप्त भेल छल। हम १९५४ मे मैट्रिक्यूलेशनक छात्र छलहुँ। एम० एल० एकेडमी, लहेरियासराय, जकर हम छात्र छलहुँ। ओहि समयमे मैथिलीकेँ मातृभाषा रूपमे पढ़निहार छात्रक संख्याक दृष्टिएँ अग्रणी छल। पण्डित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली विषयक एकमात्र अध्यापक छलाह। हुनक व्यक्तित्वक प्रभावेँ सैकड़ो छात्र मैथिली विषय पढ़ैत छलाह। श्रीअमर जी केवल विषयक रूपमे मैथिली नहि पढ़बैत छलाह अपि तु मैथिली आन्दोलनक समस्त इतिहाससँ छात्रकेँ परिचित करा दैत छलाह। से डॉ० अमरनाथ झा रचित निबन्ध 'सिन्हा साहेब' पढ़यबाक क्रममे न केवल डॉ० झाक विद्वत्ता ओ शिक्षा जगतमे हुनक उपलब्धि एक परिचय दऽ देने छलाह अपि तु हुनका द्वारा मैथिलीकेँ बिहारक शिक्षाक माध्यमक रूपमे कोना स्वीकृति दिआओल गेल ओ डॉ० झा अपन व्यक्तित्वक प्रभावेँ कोना, कऽ, कते मैथिलीक स्वत्व ओ अस्तित्वक रक्षा कयलनि तकरहु सभक विस्तरेण परिचय दऽ देल गेल छल। अतः एम० एल० एकेडमीक मैथिली छात्रगणमे डॉ० झाक प्रति सहज श्रद्धाक भाव छल। से जखन श्री अमर जी छात्रकेँ सूचित कयलथिन जे डॉ० अमरनाथ झाक एकटा भाषण दरभंगामे होबऽ जा रहल अछि तँ स्वभावतः सकल मैथिली छात्रगण डॉ० झाक दर्शन करबाक ओ भाषण सुनबाक हेतु लालायित भऽ उठलाह।

१९५४ ई०क प्रायः फरवरीक मास छल। बाबू श्रीकृष्ण नन्दन सिंह द्वारा संस्थापित 'बाबू हरिनन्दन सिंह मेमोरियल ट्रस्टक' दिस सँ आयोजित 'यदुनन्दन सिंह व्याख्यान माला' मे पहिल भाषण डॉ० अमरनाथ झा केँ देबाक छलनि। सभाक आयोजन दरभंगाक टाउन हाल मे छल। हमरा लोकनि झुण्ड बान्हि कऽ टाउनहाल पैदले गेल रही। सभा अत्यन्त गम्भीर ओ गरिमापूर्ण छल। नगरक प्रायः अधिकांश विशिष्ट बुद्धिजीवी वर्ग सँ सभाभवन भरल छल। ओहि सभामे डॉ० अमरनाथ झाक 'भारतीय शिक्षा' विषयक दीर्घ भाषण भेल आ लोक सर्वथा शान्त भावसँ सुनैत रहल। डॉ० अमरनाथ झाक भव्य व्यक्तित्व, मन्थर गति मे उच्चरित

Scanned by CamScanner

गम्भीर मुदा स्फीत वाणी, स्पष्ट विचारसँ प्रभावित भेलें बिना नहि रहल जा सकैत छल। डॉ० अमरनाथ झाक ई पहिल ओ अन्तिम दर्शन छल। भविष्यमे पुनरपि एहन सुयोग भेटितय मुदा अग्रिम वर्ष १९५५क सितम्बर मासमे अकस्मात् हुनक देहावसान भऽ गेलनि।

परन्तु एतबहु मे हम अपनाकें धन्य मानैत रहलहुँ अछि जे एकमात्र दर्शन सँ डॉ० अमरनाथ झाक कनिष्ठ समकालिक होयबाक गौरव हेतु एक गोट दुर्लभ आ अविस्मरणीय अवसर भेटल।

डॉ० झा अपन जीवनकालमे भारतीय शिक्षा जगतक महान् स्तम्भ छलाह आ हिनक एक-एक गोट विचारकें गम्भीरतासँ सूनल जाइत छलनि। भारतीय संस्कृति, शिक्षा, विश्वविद्यालय, भारतक भाषा-समस्या इत्यादिक सम्बन्धमे डॉ० झाक चिन्तन स्पष्ट, विचार सुनिश्चित ओ अभिव्यक्ति निर्भीक-निस्संशय रहैत छलनि। १९४८ ई० मे मैथिल महासभाक अधिवेशनमे विशिष्ट अतिथिक रूपमे जे भाषण देने छलाह से द्रष्टव्य थिक, कारण एहि उक्तिसँ हुनक विचार-सरणिक स्पष्ट परिचय भेटि जाइछ–

'आइ काल्हि अपनाकें हिन्दू कहब कठिन भै गेल अछि। हिन्दू धर्म ओ ओकर संस्कृति-सभ्यता सर्वोपरि प्रशस्त ओ प्राचीन अछि। किन्तु हिन्दू-धर्मक मूल सिद्धान्तक दृष्टिएँ हमरा लोकनि वहुत मोतिआएल छी। महासभाक ईहो कर्तव्य थिकैक जे हिन्दू धर्मक मूलसिद्धान्तक अन्वेषण करय तथा एहि सम्बन्धमे ग्रन्थ प्रकाशित करय।'

'राष्ट्रभाषाक हेतु हिन्दीक समर्थन यथार्थ थिक। परञ्च विभिन्न प्रान्तसँ ईहो प्रश्न उपस्थित छैक जे प्रत्येक प्रान्तक समान अभिरुचि रखबाक हेतु संस्कृतकें राष्ट्रभाषाक पद भेटैक। दक्षिणक मद्रास, मैसूर, कोचीन, ट्रावनकोर आदिक प्रतिनिधि स्पष्ट शब्दें घोषित कैलन्हि जे दक्षिणमे राष्ट्रभाषाक पद पर हिन्दीक नहि संस्कृतैक समर्थन करब। मिथिला सदा सँ संस्कृत-सेवी रहल अछि। ई संस्कृतक पक्ष-समर्थन उचित करत।'

'मिथिला सन विद्या-केन्द्रमे विश्वविद्यालयक स्थापना परमावश्यक। जनताक समर्थन अपेक्षित किन्तु विश्वविद्यालयक जतै जतै स्थापना भेल छैक से व्यक्ति विशेषैक साहर्य्यें। महाराज सिंधिया, महाराज पन्ना, हरिसिंह गौड़ प्रभृति एकर उदाहरण छथि। हिन्दू विश्वविद्यालयहुक स्थापनामे स्व० मिथिलेश एवं मालवीय जीक वैयक्तिक प्रेरणा अवलम्बन भेलैक।' (स्वदेश, वर्ष-१, अंक-४, १९४८)

राष्ट्रभाषा हिन्दी, प्रान्तीय भाषा ओ मातृभाषा मैथिलीक जीवनमे की स्थान होयबाक चाही, एहि सभक मध्य नागरिक-कर्त्तव्यक की विभाजक रेखा होयबाक चाही, तकर स्पष्ट अवधारणा डॉ० अमरनाथ झा कें छलनि आ तकरा ओ विभिन्न मञ्चसँ व्यक्त करैत छलाह। हिन्दी साहित्य सम्मेलनक निर्वाचित अध्यक्षक रूपमे अवोहर अधिवेशनमे भाषण देबऽ लगलाह तँ अपन भाषण एही वाक्यसँ आरम्भ कयने छलाह जे हमर मातृभाषा हिन्दी नहिं मैथिली थीक। एहि हेतु हिन्दी क्षेत्रमे कटुतम आलोचना भेल छलनि। परन्तु ताहि सभक कोनो प्रभाव हुनक विचार-आचार पर नहि पड़लनि।

पुनः ओ मैथिली साहित्य परिषद्क अध्यक्ष पदसँ भाषण दैत कहने छलाह–

'सम्भव जे हिन्दीक दुराग्रही समर्थक हमरा सबहिक राष्ट्रद्रोही, हिन्दी-विद्वेषी, इत्यादि रूपैं वर्णन करथि। परन्तु एहि संकीर्ण, निराधार, कटु आलोचनाक भयसँ हम अपन कर्त्तव्यपथसँ भ्रष्ट नहिं हएब।'

Scanned by CamScanner

'हम ई स्पष्ट कए देबए चाहैत छी जे हमर ई इच्छा नहिं जे मैथिली हिन्दीक स्थान लेअए। हिन्दीकें हम राष्ट्र-भाषा मानैत छी, हिन्दीक हम यथासाध्य सेवा करब, हिन्दीक समस्त देशमें प्रचार हो, तकर हम उपाय करब। परन्तु, हमरा ईहो कहैत संकोच नहिं जे हिन्दी हमर मातृभाषा नहिं थीक। हिन्दी हमर मातृभाषाक स्थान नहिं लए सकैत अछि। हिन्दीक व्यवहार हम अपन नेना सभमें, अपन स्त्रीवर्गमें, अपन घरक काजमें नहिं कए सकैत छी। राष्ट्रभाषा प्रचारक अर्थ ई नहिं जे प्रान्तीय भाषा सभक हानि हो अथवा ओकर लोप हो।'

डॉ० झाक मातृभाषा मैथिलीक प्रति केहन अनुराग ओ ओकरा प्रति केहन कर्त्तव्य-बोध छलनि, तकर परिचय हुनक एहि उक्तिसँ नीक जकाँ भेटैत अछि जकर अनुकरण प्रत्येक मैथिलीभाषीकें कर्त्तव्य थिक-

'मातृभाषा में भक्ति ककरा नहिं होइत छैक ? जन्महिसँ जे बोली माइक मुँहें सुनबाक सौभाग्य होइत छैक, जाहि बोलीक स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक, जाहिमें अपन हृद्गत भावक स्वतः उद्गार होइत छैक, तकर परित्याग केओ कोना कए सकैत अछि ? मैथिलीक सेवा करबामें, मैथिलीक उन्नतिक इच्छा करबामें, मैथिलीक प्रचारक उद्योग करबामें, कोनो प्रकारक यदि उदासीनता हमरा लोकनि देखाबी तँ लज्जाक विषय थीक।'

से डॉ० झा जीवन भरि मैथिली भाषाक अस्तित्व-रक्षा ओ मैथिली साहित्यक समृद्धिमे तन-मन-धन सँ यथासाध्य, यथावसर अपन योगदान करैत रहलाह।

मैथिलीमे पुस्तकक प्रकाशन होइत रहय ताहि हेतु ओ लेखक लोकनिकें अपनहुँ दिससँ अर्थ-साहाय्य करैत छलाह। मैथिलीक प्राचीन ओ श्रेण्य साहित्यक संरक्षण-प्रकाशनमे ओ विशेष अभिरुचि रखैत छलाह। एही अभिरुचिक अनुरोधें ओ चन्दाझा रचित महेशवाणी-संग्रह, हर्षनाथ-काव्य-ग्रन्थावली, गोविन्ददासक गीतक संग्रह शृंगार-भजन गीतावलीक सम्पादन-प्रकाशन कयने छलाह। ओ म० म० परमेश्वरझाक मैथिलीमे रचित महिषमर्दिनी नाटक (दुर्गा चरित नाटक नामे सम्प्रति प्रकाशित भेल अछि) कें प्रकाशित रूपमे देखबाक हेतु ततबा उत्सुक छलाह जे ओ १९५५ मे स्वयं एकटा व्यक्तिगत पत्र बिहारक शिक्षा निदेशक धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्रीकें लीखि प्रकाशन-व्यवस्था करयबाक आग्रह कयने छलथिन। पत्र निम्न रूपक अछि--

King George Avenue
Patna, May 6

My dear Dr. Shastri

M. M. Pandit Parmeshwar Jha was a renowned scholar. He left behind him the manuscript of a drama in the traditional style in mixed Sanskrit and Maithili. I have read it and consider it of great merit. I shall be glad if you can help in the publication.

Yours sincerely

A. Jha

Scanned by CamScanner

ओही वर्ष सितम्बर मासमे हुनक देहावसान भऽ गेलनि आ ओ ओहि पोथीक प्रकाशन नहि करवा सकलाह। सम्भव अछि एहन-एहन औरो मैथिली ग्रन्थ सभक प्रकाशनक संकल्प मनमे रखने होथि मुदा से सब पड़ले रहि गेल।

मैथिलीमे डॉ० अमरनाथ झा द्वारा लिखित साहित्य वहुत वेसी नहि छनि। जे छनि से गद्यमे लिखित, पोथी सभक भूमिका, सम्मति, शुभकामना ओ भाषण।

सम्मति ओ शुभकामना तँ संक्षिप्त रहितहिं छलनि, भूमिका सव सेहो नातिदीर्घ रहैत छलनि। ओ एहि सबमे अनावश्यक शब्द-व्ययक पक्षधर छलाह नहि। एकर कारण ओ एकावली-परिणयक भूमिकामे एहि रूपमे कहने छथि –

'बहुतो भूमिका-लेखक पुस्तक-प्रणेताक प्रशंसामे अतिशयोक्तिक दोषी होइत छथि–जाहि अतिशयोक्तिसँ पढ़निहारक मनमे भूमिका लेखकक नीर-क्षीर-विवेकक योग्यताक प्रति सन्देह उत्पन्न भए जाइत छैक।'

अति संक्षिप्त होइतहु हुनक द्वारा लिखल भूमिका, सम्मति, शुभकामना अत्यन्त सारगर्भित होइत छलनि। एक-एक वाक्य, वाक्यक एक-एक शब्द सूत्र सदृश गम्भीर अर्थ सँ गर्भित रहैत छलनि।

भाषण अवश्ये दीर्घ होइत छलनि। भाषण सबमे हिनक बहु आयामी विचारक गहनताक संगहि विस्तार देखल जाइत अछि। एहि दृष्टिएँ डॉ० झाक दुइ गोट भाषण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। एकटा भाषण छनि 'भारतीय शिक्षा' विषयक, जकर चर्चा एहि निबन्धक आरम्भेमे कयल गेल अछि। ई भाषण पुस्तकाकर सेहो प्रकाशित भेल अछि। एहि भाषणमे भारतक शिक्षाक अतीतकालीन स्वरूप ओ वर्त्तमान दशाक विश्लेषण करैत एकर भविष्यक सम्बन्धमे कर्त्तव्यताक दिशा-निर्देश कयल गेल अछि। एहि भाषणमे शिक्षा-जगतक एकटा अद्वितीय महारथीक चिन्ताधाराक परिस्फुटित रूप सहजहिं देखल जा सकैत अछि जे शिक्षा-सम्बद्ध प्रत्येक मनस्वी व्यक्तिक हेतु चिन्तनीय ओ मननीय अछि।

दोसर छनि मैथिली साहित्य परिषद्क अध्यक्ष पदसँ देल गेल बृहत् भाषण। ई भाषण पहिने मिथिला-मिहिरमे समग्र रूपमे प्रकाशित भेल छल। पश्चात् मैथिली-गद्य-संग्रह (तृतीय भाग), निर्माण पत्रिका ओ 'भाषण-त्रयी' नामक पुस्तकमे समग्र रूपमे उद्धृत कयल जाइत रहल अछि। एहि भाषणमे मैथिली साहित्यक विकासक रूप-रेखा ओ महत्त्व पर प्रकाश दैत प्राचीन मैथिली साहित्यक अन्वेषण, अनुरक्षण, अभिनव विविध कोटिक साहित्य-सर्जनक आवश्यकता ओ मैथिली लोक साहित्यक संकलन-प्रकाशन ओ तत्सम्बन्धी गवेषणाक अनिवार्यता पर प्रकाश दैत भावी कार्ययोजनाक सम्बन्धमे मूल्यवान् दिशा-निर्देश देल गेल अछि। वास्तव मे मैथिली भाषा-लिपि-साहित्यक महत्त्व-प्रतिपादन सहित ओकर अन्वेषण, संरक्षण ओ सम्बर्द्धनक दिशामे ई भाषण 'मैग्नाकार्टा' कहल जा सकैत अछि।

हम देखैत छी जे डॉ० जयकान्त मिश्र ओहि भाषणक पश्चात् काल हुनकहि निर्देशन मे जे मैथिली भाषा-साहित्य-विषयक अनुसन्धान कार्य ओ इतिहास-रचना कयलनि तँ ओहि मे डॉ० झाक परिषद् वाला भाषणक पूर्णतः अनुसरण कयल गेल। आ सम्प्रतियो हुनक ओ भाषण सर्वथा प्रासंगिक अछिहे।

डॉ० अमरनाथ झा मिथिला-मैथिल-मैथिलीक महान् गौरव-स्तम्भ छलाह। समस्त भारत ओ विश्वमे डॉ० झा मिथिलाक एकटा प्रतीक, एकटा 'आइडेण्टिटी' छलाह। अपन जीवन कालमे मैथिली भाषा ओ साहित्यक गुरुतम अभिभावक ओ संरक्षक रूपमे अभय-वर प्रदान कयनिहार बनल रहलाह। ओहि महामनीषीकेँ हुनक जन्म शताब्दीक पुनीत अवसर पर कोटि-कोटि मिथिलावासी दिससँ कोटिशः सविनय प्रणमन निवेदित अछि।

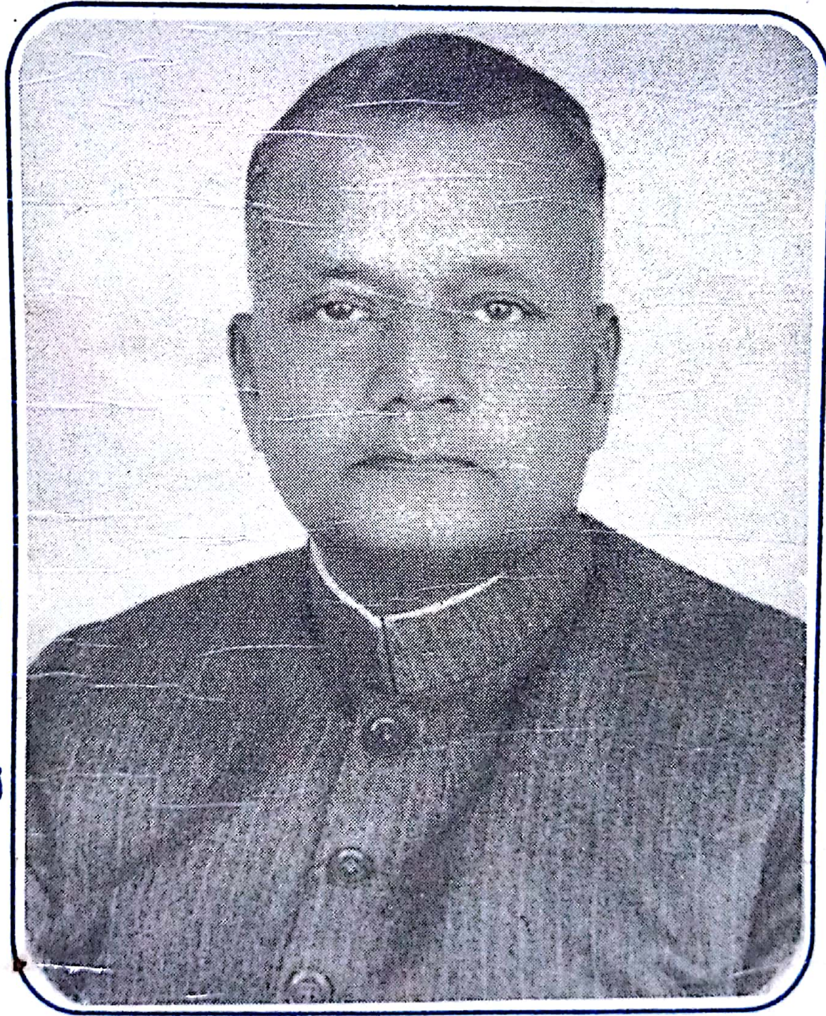
Scanned by CamScanner

स्मारिका

जन्म शतवार्षिकी

डॉ० अमरनाथ झा राष्ट्रीय संगोष्ठी

सितम्बर 27-28, 1997



[1897 - 1997]

मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग

Scanned by CamScanner